225hi04

4

भारत की लोककला

भारत की लोककला में आर्यों से पूर्व की संस्कृति की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। समस्त भारत के पारम्परिक जीवन में विभिन्न धर्म, संप्रदाय तथा विश्वास साथ–साथ पनपे हैं। **तन्त्र शक्ति**, **वैष्णव** तथा **बौद्ध** जैसे संप्रदाय लोक कलाकारों के जीवन में महत्वपूर्ण हैं। ग्रामीण समाज की कला तथा शिल्प–कौशल की वस्तुओं की आवश्यकताएं स्थानीय कलाकारों तथा शिल्पकारों द्वारा पूरी होती हैं। ये आवश्यकताएं मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती हैं: **(1) कर्मकांडी अथवा आनुष्ठानिक (2) उपयोगितावादी (3) वैयक्तिक**।

कर्मकाण्डी लोककला भी कई प्रकार की है जैसे कि **पटचित्र, पिचआई, अल्पना** तथा **कोलम**, आदि। लकड़ी पर सजावटी खुदाई, सुई–डोरे की कढ़ाई, डलिया बनाना तथा मिट्टी के बर्तन बनाना आदि मूल रूप से उपयोगितावादी लोककलाएं हैं। यह काम किसी औपचारिक प्रशिक्षण के बिना ग्रामीण कलाकारों द्वारा किया जाता है। यह कला पीढ़ी–दर–पीढ़ी दोहराई जाती है। उदाहरण के तौर पर पक्की मिट्टी से बने खिलौनों की परिकल्पना में मुश्किल से कोई परिवर्तन आया है। 5000 वर्ष पूर्व भी **हड़प्पन** संस्कृति के दौरान इसी प्रकार के खिलौने बनते थे। वैसे कुछ लोक कलाकार समय–समय पर कुछ वैयक्तिक तौर पर नए स्वरूप देने का प्रयोग करते रहते हैं जिससे नई लोककला का स जन होता है। ये कलाकार पुरानी शैली में थोड़ा–बहुत परिवर्तन करके नई शैली को जन्म देते हैं। इस प्रकार के नवीन प्रयोग **मधुबनी चित्रकला, कंथा** तथा **कालीघाट** के पटचित्रों में दिखाई देते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप:

- भारत में लोककला की प ष्ठभूमि तथा उसके क्षेत्र का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत की विभिन्न क्षेत्रीय लोककला को पहचान सकेंगे;
- इन लोककलाओं के माध्यम, तकनीक तथा शैली को समझ सकेंगे;
- लोककला में नई परिकल्पना तथा उसके अभिप्राय को बता सकेंगे, और
- विभिन्न कर्मकाण्डी लोककलाओं के नाम लिख सकेंगे।

4.1 कोलम

शीर्षक	:	कलश से फर्श पर की गई चित्रकारी
शैली	:	कोलम
कलाकार	:	कोई अज्ञात घरेलू महिला
माध्यम	:	चावल की पिट्ठी तथा रंग
समय	:	1992
उपलब्धि का स्थान	:	तमिलनाडु में तन्जावुर के पास एक बस्ती

सामान्य विवरण

विश्वभर की सभी संस्कृतियों में फर्श की सजावट करने का बड़ा प्रचलित रूप है। भारत में भी देश के हर एक भाग में अलग–अलग माध्यम में फर्श पर सजावट की जाती है। कहीं पर यह **अल्पना**, कहीं **रंगोली**, **कोलम** तथा **साँझी** आदि सजावट के लिए विभिन्न माध्यम हैं। दक्षिण भारत में सांस्कृतिक तथा धार्मिक त्यौहारों के अवसर पर **कोलम** बड़ा महत्वपूर्ण हिस्सा है। **पौंगल** तथा अन्य त्यौहारों के अवसर पर प्रत्येक घर के सामने तथा पूजा की वेदी के सामने के स्थान पर फर्श पर सजावट का यह कार्य किया जाता है। फर्श की सजावट के अन्य भारतीय माध्यमों की भांति **कोलम को भाग्य और सम द्धि का प्रतीक माना जाता है।** कोलम द्वारा सजावट करने की परिकल्पना तथा इसका मूल ध्येय पारम्परिक है। यह फूलों से ज्यामितीय रूप में बनाई जाती है। इसके लिए फर्श पर पानी छिड़क कर उसे गीला या सीलनभरा कर देना चाहिए। मोटे चावल को पीस कर उसके पाउडर को अंगूठे तथा आगे की उंगली के बीच पकड़ कर रखते हैं। हाथ घूमता जाता है और चावल के पाउडर को फर्श पर गिरने दिया जाता है। फर्श पर जो आकृति बनाई जाती है, वह पूर्व निर्धारित है। आवश्यक यह है कि चावल का पाउडर लगातार बिना किसी रुकावट के गिरता रहे तथा जो आकृति फर्श पर बनाई गई है, वह उभरती जाए। लगातार अनुभव प्राप्त करते रहने से यह कलाकृति अच्छे तरीके से बन जाती है। युवा लड़कियाँ अपनी माँ, दादी तथा नानी माँ से यह कला सीखती हैं। इस सांकेतिक उद्देश्य के अतिरिक्त यह क्रिया ज़िंदगी का सही अर्थ भी समझा देती है। चावल का पाउडर आसानी से मिल जाता है। उससे यह भी सिद्ध होता है कि कला को जीवन के इस अंश का भी ध्यान रखना चाहिए। कोलम पेंटिंग एक ग हिणी बनाती है। इससे कलाकार स्वतन्त्र रूप से कलाकृति बनाना सीखता है। इस सन्दर्भ में अलग–अलग सांकेतिक आकार जैसे कि घड़े, लैम्प तथा नारियल के पेड़ प्रयोग किए जाते हैं। ये सभी भारतीय ग्रामीण जीवन के अनिवार्य अंग हैं। ये मूलरूप से ज्यामितीय आकार के होते हैं जिसमें लाल, नारंगी, नीले, पीले तथा गुलाबी चटकीले रंग प्रयोग किए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. भारत में फर्श पर बनाई जाने वाली सजावट का वर्णन कीजिए।
2. कोलम पेन्टिंग में प्रयोग की जाने वाली बनावट और आकृति कौन–सी हैं?
3. कोलम पेन्टिंग के तरीके को संक्षेप में लिखिए।
4. कोलम पेन्टिंग में किन वस्तुओं की चर्चा की गई है?

4.2 फुलकारी

शीर्षक	:	चादर
कलाकार	:	अज्ञात
शैली	:	फुलकारी
माध्यम	:	कपड़ों की कढ़ाई (रंगीन धागे से)
समय	:	समकालीन

सामान्य विवरण

फुलकारी का वास्तविक अर्थ फूलों का काम है। यह नाम एक प्रकार की कढ़ाई का है जिसे पंजाब में प्रायः ग्रामीण महिलाएँ करती हैं। यह कढ़ाई का काम छोटे–बड़े कपड़े पर किया जाता है। ये कपड़े अलग–अलग कामों के लिए प्रयोग होते हैं; जैसे घूंघट के लिए (सिर ढंकने के लिए), पहनने वाले कपड़े, चादर तथा विस्तर को ढंकने वाले कपड़े के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। यह कढ़ाई का काम मोटे कपड़े पर चमकीले सिल्क के टुकड़ों को मोटे कपड़े के पीछे की ओर से रफू करके सीं दिया जाता है। ये टांके गिने हुए होते हैं।

फुलकारी की परिकल्पना मूल रूप से ज्यामितीय आकार की होती है। कपड़े के चारों ओर चौकोर तथा त्रिकोण आकार की आकृति बनाई जाती है जिसमें खुशनुमा रंग की कढ़ाई की जाती है। प्रायः सरल आकृति बनाई जाती है और फिर बड़ी–बड़ी आकृतियाँ बनाई जाती हैं। इसमें चौकोर, छीटें, त्रिकोण तथा सीधी रेखाएं एवं टेढ़ी–मेढ़ी रेखाएं अलग अलग बदलाव के साथ काढ़ी जाती हैं। इस पूरी योजना में जिस रंग की प्रधानता रहती है वह पंजाब में पके गेहूं का स्वर्णिम रंग होता है।

स्त्रियाँ पहले अलग–अलग हिस्सों की बाहरी रूपरेखा को सुई से उभारती हैं और फिर एक निकटवर्ती दूसरे हिस्से को विरोधी रंगों से भरती हैं। ऊर्ध्वाकार (खड़ा हुआ) तथा क्षैतिज (समतल) धागों के कारण बहुत सुन्दर एवं आकर्षक नमूने बनते हैं।

सर्वमान्य फुलकारी के कार्य की परिकल्पना परम्परावादी ज्यामितीय आकार की होती है। तारों को सुनहरे पीले तथा सफेद रंग मिश्रित रजत (चांदी के रंग से मिलता रंग) रंग के धागों से लाल कपड़े पर काढ़ा जाता है। मुख्य रूप से परिकल्पना में एक बड़े सितारे के चारों ओर छोटे सितारे विभिन्न रूप में काढ़े जाते हैं जिससे कपड़े पर एक हीरे जैसी आकृति उभर आती है। रेशम के धागे की चमक से कपड़े का लाल आधार का प्रभाव बड़ा मनभावन लगता है।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. फुलकारी का क्या अर्थ है?
2. फुलकारी में कौन–सी सामग्री का प्रयोग किया जाता है?
3. इस कढ़ाई के काम में किस रंग की प्रधानता रहती है?
4. फुलकारी का नमूना कैसे उभरता है?

4.3 कन्था कढ़ाई

शीर्षक	:	बंगाली 'कन्था'
कलाकार	:	अज्ञात
शैली	:	कन्था कढ़ाई
माध्यम	:	रेशमी कपड़े पर रंगीन धागों से कढ़ाई
समय	:	समकालीन

सामान्य विवरण

बंगाल में कढ़ाई और रजाई (लिहाफ़) पर अत्यंत मनमोहक कढ़ाई की लोक प्रथा है। इस प्रथा का नाम **'कन्था'** है। प्रयोग न की जाने वाली पुरानी साड़ियों तथा धोतियों पर कन्था बनाई जाती है। इन्हें मोटा (भारी) बनाने के लिए जोड़कर सीं दिया जाता है। बंगाल में सभी श्रेणी की महिलाएं यह कार्य करती हैं। विशेषतः व द्ध महिलाएं अपने अतिरिक्त समय में यह काम करती हैं। रंगीन धागों से पुरानी साड़ियों के बॉर्डर (किनारों) पर कन्थाओं को साड़ी की सतह से सीं दिया जाता है। साड़ियों की सतह पर अलग–अलग तरह की परिकल्पना की जाती है। रज़ाइयाँ (लिहाफ़), शादी की चटाइयाँ, थैले, शीशे तथा गहने–जवाहरातों को ढकने के लिए कपड़ों पर कढ़ाई की जाती है।

कन्थाओं के मोटिफ और डिजायन ग्रामीण प्राकृतिक द श्यों, कर्मकाण्डीय और धार्मिक क्रियाओं (मंडाला), नित्य प्रयोग में आने वाली वस्तुओं, ग्रामीण त्यौहार, सरकस तथा अन्य मनोरंजन प्रदान करने वाले खेलकूद तथा एतिहासिक हस्तियाँ जैसे कि रानी विक्टोरिया से लेनिन तक के चित्रों से लिए जाते हैं। इन कन्थाओं के मोटिफ यह स्पष्ट करते हैं कि इसके कलाकार यद्यपि प्रायः अनपढ़ होते हैं लेकिन इनमें अपने आसपास की वस्तुओं को गौर से देखने की निरीक्षण शक्ति होती है।

सूचीबद्ध कन्था एक प्रकार की साड़ी है जो एक विशिष्ट पारम्परिक शैली तथा तकनीक से सिली होती है। इनके मोटिफ विभिन्न प्रकार के पशु तथा मानवी आकृति के रूप होते हैं। साड़ी के आधार गुलाबी रंग को विभिन्न रंगों के धागों से चेन स्टिच (श ंखलाबद्ध धागों की कढ़ाई) पद्धति से कढ़ाई की जाती है। इसमें सफ़ेद, हरा, बैंगनी, लाल, भूरा, पीला तथा काले रंग का प्रयोग किया जाता है।

राजा जैसा दिखने वाला व्यक्ति घोड़े पर बैठा है, उसके सिर पर छाता (छत्र) लगा हुआ है और उसके हाथ में विशेष प्रकार की चिड़ियाँ तथा मधुमक्खियाँ मोटिक के तौर पर प्रयोग की गई हैं। इस मोटिफ में कालीघाट पटचित्र का प्रभाव बहुत स्पष्ट है।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. कन्था का प्रारूप एवं प्रेरणा का क्या स्रोत है?
2. उन उपयोगी वस्तुओं की सूची बनाइए जिन पर कन्था की कढ़ाई की जाती है।
3. दो पंक्तियों में कन्था साड़ी का वर्णन कीजिए।
4. कन्था को किस लोककला से प्रेरणा मिली है?

4.2 1. फूलों का काम

2. कपड़ा तथा चमकीला रेशम

3. स्वर्णिम (सुनहरा)

4. समतल तथा खड़े हुए टांके (सिलाई, कढ़ाई के)

4.3 1. ग्रामीण प्राकृतिक चित्र, कर्मकाण्डी मंडाला, नित्य के जीवन उपयोग की आसपास की वस्तुएं, ग्रामीण त्यौहार, सरकस तथा ऐतिहासिक ख्याति के व्यक्ति

2. लिहाफ़ (रज़ाई, शादी की चटाई, थैले, शीशों, आभूषणों के आवरण, इत्यादि)

3. शृंखलाबद्ध टांके तथा सफेद, हरे, बैंगनी, लाल, भूरा, पीला तथा काले आकार के घोड़े, राजा, चिड़िया तथा मधुमक्खियाँ, इत्यादि।

4. काली घाट पटचित्र।